यू.पी.टी.यू.सी. फ्रैक्शन सर्कुलर नं० २/५०
तमाम ज़िला कमेटियों, सूबाई मनती फ्रैक्शनों, ज़िला टी यू फ्रैक्शनों के नाम

'अमन हफ़्ते' के बारे में

साथियो ; आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की जनरल काउन्सिल ने अपनी पिछली बैठक (२६ फ़रवरी १९५०) में फ़ैसला किया है कि २३ अप्रैल से १ मई तक 'अमन हफ़्ता' मनाया जाये.

पूरे मुल्क के पैमाने पर चलने वाली अमन तहरीक का जायज़ा लेने और उस के तजुर्बे के बल पर इस तहरीक को और ऊँची सतह तक उठाने के लिये यह फ़ैसला बहुत अहम है.

(१)

पी.बी. ने अपने २२ फ़रवरी के बयान में अमन तहरीक की अहमियत के बारे में कहा है कि "विस्तृत स्वरूप रखने वाली अमन तहरीक पूरे मुल्क में शुरू हो गई है. हमें इस तहरीक को उन रास्तों पर आगे बढ़ाना चाहिये जो कोमिन फ़ार्म ने अपने प्रस्ताव "अमन की हिफ़ाज़त और जंग खोरों के खिलाफ़ जद्दोजहद" में दिखलाया है. इस तहरीक को पार्टी और अवामी जमाअतों की तमाम कार्रवाइयों की धुरी बन जाना चाहिये. यह हमारा फ़र्ज़ है कि [illegible] और [illegible], जो सीधे सीधे अंग्रेज़ व अमरीकी साम्राज्यवादियों की एजेन्ट बन गई है, और जो हिन्दुस्तान को सोवियत रूस, अवामी जम्हूरियतों और एशियाई अवाम की आज़ादी की तहरीकों के खिलाफ़ लड़ाई का अड्डा बना देना चाहती है, की क़ौम-दुश्मन और गद्दार [illegible] का [illegible] करते हुए अपनी [illegible] की जद्दोजहद और अमन की जद्दोजहद को एक कर दें."

(पी बी का बयान अंग्रेज़ी सफ़ा ४)

[illegible] प्रस्ताव "अमन की हिफ़ाज़त और जंग परस्तों के खिलाफ़ जद्दोजहद" में [illegible] नीचे लिखे बुनियादी काम बताये गये हैं.

१. अमन के योद्धाओं की तहरीक को चलाने और उसे तनज़ीमी तौर से म[illegible] करने के काम को और ज़्यादा [illegible] में लिया जाये और इस तरह अवाम के [illegible] को [illegible] तहरीक में लाकर उसे आलम-गीर बनाया जाये.

२. मज़दूर तबक़े की अमन तहरीक में और ज़्यादा अमली शिरकत मज़दूर तबक़े की एकता और [illegible] की [illegible] अमन तहरीक को और आगे बढ़ाने में फ़ैसलाकुन अहमियत रखती है.

३. मज़दूर तहरीक में असंगठन और फूट फैलाने वाले दक्षिण-पंथी सोशलिस्टों के खिलाफ़ जम कर लड़ने से ही मज़दूर तबक़े की एकता हासिल की जा सकती है.

४. "इन जंग परस्तों के इन्सान-दुश्मन प्रोपेगंडे के खिलाफ़, जो योरोप और एशिया को खूनी जंग का मैदान बना देना चाहते हैं, कम्युनिस्ट और मज़दूर पार्टियों को चाहिये कि वह अवाम के बीच मुस्तैदम और दायमी अमनदोस्त लड़ाकू प्रचार करें.

५. अमन के लिये अवामी जद्दोजहद के नये और असरदार रूपों को बड़े पैमाने पर लागू करना चाहिये.

६. "नव-आबादियाती मुल्कों की कम्युनिस्ट और मज़दूर पार्टियाँ अपना फ़र्ज़ समझती हैं कि वह क़ौमी आज़ादी की लड़ाई को अमन की लड़ाई में जज़्ब कर दें."

(कम्युनिस्ट जनवरी ५० सफ़ा ११५-११६-११७)

(२)

इस हफ़्ते की तैयारी का सब से पहला और अहम काम यह है कि खुद पार्टी मेम्बरों और खास तौर से मज़दूर साथियों को अमन तहरीक की अहमियत समझाई जाये. तक़रीबन हर ही जगह इस काम की तरफ़ मुजरिमाना लापरवाही बरती गई है. इस काम को किये बग़ैर हम अमन आन्दोलन को पार्टी और अवामी जमातों की तमाम कार्रवाइयों की धुरी नहीं बना सकते, तमाम ज़िला ट्रेड यूनियन, फ्रैक्शनों को चाहिये कि वह कम से कम नीचे दिये गये दस्तावेज़ों की सामूहिक पढ़ाई करें. और इस पर बहस करें और तमाम सैलों में इस की रिपोर्टिंग का पक्का बन्दोबस्त करें.

कोमिन फ़ार्म का प्रस्ताव "अमन की हिफ़ाज़त और जंग परस्तों के खिलाफ़ संघर्ष" (कम्युनिस्ट नं० १, १९५०)

हिन्दुस्तानी अमन कांग्रेस का जायेज़ा (कम्युनिस्ट १ , १९५०)

हिन्दुस्तानी अमन कांग्रेस का मेनीफ़ेस्टो

इस हफ़्ते के सिलसिले में हमारे नीचे दिये काम है: —

१. कोमिनफ़ार्म की पहली हिदायत के अनुसार इस हफ़्ते में हमें अमन तहरीक को तनज़ीमी तौर से और मज़बूत करना है. और इस में नये अनासिर को शरीक करना है.

जहाँ कहीं ज़िला अमन कमेटियाँ बन गई है, वहाँ उन्हें कामयाब बनाने की कोशिश करनी चाहिये. अमन कमेटियों को अमन तहरीक चलाने के हथियार की तरह काम करना चाहिये इन कमेटियों में नये अनासिर को जोड़ना चाहिये.

जहाँ कहीं ज़िला अमन कमेटियाँ अभी नहीं बनी है वहाँ इस हफ़्ते के सिलसिले में फ़ौरन ऐसी कमेटियाँ बनाना चाहिये और उसके ज़रिये ही हफ़्ते का प्रोग्राम पूरा करवाना चाहिये.

२. लेकिन सिर्फ़ ज़िला कमेटियाँ बनाने ही से काम नहीं चलेगा अगर हमें सही माने में फैले हुए अवाम को इस तहरीक में शरीक करना है तो एक एक मिल में मोहल्ले में , गाँव में स्कूलों और कालिजों में अमन कमेटियाँ बनाना होंगी . इस काम की तरफ़ पूरी तवज्जेह देना चाहिये.

२. कोमिन फ़ार्म की दूसरी हिदायत के मुताबिक़ इस हफ़्ते में हमें मज़दूर तबक़े को और ज़्यादा असरदार तरीक़े से अमन तहरीक की कार्रवाइयों में शरीक करना चाहिये . फ़िरोज़ाबाद देसी एक-आध जगह को छोड़ कर हमारे सूबे के अमन तहरीक की यह एक आम कमज़ोरी है कि इस में आम मज़दूरों की शिरकत बहुत कमज़ोर है अमन कमेटियाँ सिर्फ़ तरक्क़ी पसन्द मुसन्नफ़ीन या स्टूडेन्ट यूनियन का प्लेट फ़ार्म बन गई है. इस कमज़ोरी को फ़ौरन दूर करना है. ट्रेड यूनियनों को ही अमन कमेटियों की रीढ़ की हड्डी बनाना चाहिये. और पू[illegible] हफ़्ते की कार्रवाइयों में मज़दूर तबक़े की असली शिरकत पर पूरा ज़ोर देना चाहिये . [illegible] तमाम मज़दूरों को अमन कमेटियों और उनकी कार्रवाइयों में शरीक करना चाहिये जो अ[illegible] हिफ़ाज़त और जंग परस्तों के खिलाफ़ जद्दोजहद के हक़ में हों ख़ास तौर से सुधारवादी [illegible]यनों के असर के मज़दूरों को अमन तहरीक में शरीक करने और अमन के लिये मज़दूर तबक़े का ए[illegible]नाने की पूरी कोशिश करना चाहिये .

३. कोमिनफ़ार्म की तीसरी हिदायत के अनुसार हमें इस हफ़्ते में दक्षिण पंथी सोशलिस्टों के खिलाफ़ डट कर मोर्चा लेना चाहिये क्योंकि मज़दूर तबक़े का एका क़ायम [illegible] की यह लाज़मी शर्त है , दक्षिण पंथी सोशलिस्ट बैनुलअक़वामी पैमाने पर अमन के सब से बड़े दुश्मन है और जंग परस्तों के खुले ऐजन्ट बन गये है.

हमें इन के इस बैनुलअक़वामी रोल का डट कर परदाफ़ाश करना चाहिये और ख़ास तौर से हिन्दुस्तानी सोशलिस्ट पार्टी की " गैर जानिबदारी या " तीसरा रास्ता " की लफ़्फ़ाज़ी की नक़ाब चीर कर उन की असली अमरीकन सूरत दिखलानी चाहिये .

इसी के साथ साथ यह भी ज़रूरी है कि सोशलिस्ट पार्टी के तमाम मेम्बरों और उनकी निचली कमेटियों के साथ सहयोग करने और मुत्तहिदा ऐक्शन करने की पूरी कोशिश की जाये.

४. कोमिनफ़ार्म की चौथी हिदायत के मुताबिक़ इस हफ़्ते में हमें जंग परस्तों के इन्सान-दुश्मन प्रोपैगंडे का डट कर मुक़ाबिला करना चाहिये और दाइमी अमन का प्रचार करना चाहिये.

हफ़्ते भर बड़ी बड़ी मरकज़ी मीटिंगों , गेट , हाता कैंटीन और नुक्कड़ मीटिंगों ,पोस्टरों [illegible] चाकिंग , परचों का तांता बाँध देना चाहिये.

इस प्रचार के ज़रिये जंगी [illegible] बलाकों और समझौतों का भंडा फोड़ करना चाहिये यह बताना चाहिये कि जंग का मतलब है अवाम के लिये तबाही इस लिये जंग के खिलाफ़ और अमन की हिफ़ाज़त की लड़ाई तमाम दुनिया के अवाम की हित में है.

इन मीटिंगों में सोवियत यूनियन , पूर्वी चीन , योरप के जनवादी मुल्कों के नाम संदेश के प्रस्ताव ज़रूर पास करना चाहिये .

इस हफ़्ते में ख़ास तौर से फ़्रांस के बंदरगाह मज़दूरों और रेल मज़दूरों , हालैंड के फ़ौजियों के जंग दुश्मन ऐक्शन का डट कर प्रचार करना चाहिये और इन से हमदर्दी के प्रस्ताव पास करना चाहिये.

५. कोमिन फ़ार्म की पाँचवीं हिदायत के मुताबिक़ इस हफ़्ते में हमें अमन के लिये अवामी

जद्दोजहद के नये और असरदार रूपों को बड़े पैमाने पर लागू करना चाहिये इस सिलसिले में अमन मैनीफ़ैस्टो पर लाखों मज़दूरों और मेहनतकश अवाम की दस्तख़त कराना एक बहुत अहम काम है जिस की तरफ़ अभी तक हमारे सूबे में लापरवाही बरती जाती रही है. इस लापरवाही को फ़ौरन ख़त्म करना है. और इस हफ़्ते के अन्दर अन्दर सूबे कांफ़्रेन्स में लिये गये कोटे को पूरा करना है.

५ इस हक़ीक़त को भी नज़र में रखने की ज़रूरत है कि दूसरे सरमायादारी मुल्कों में और ख़ास तौर से फ़्रांस और इटली में मज़दूरों की जंग-दुश्मन लड़ाइयां नई ऊंची सतेह पर पहुंच रही है. हमारे सामने भी इस तरह की लड़ाइयां मुनज़्ज़म करने और इस तरह अमन के लिये "नये और असरदार रूपों" को लागू करने का काम है. इस काम को नज़र में रखते हुए लड़ाई के कारख़ानों के मज़दूरों को अमन तहरीक में शरीक करने का काम बहुत अहम बन जाता है हमारे सूबे में बहुतेरे आर्डिनेन्स डिपो हैं, गन फ़ैक्टरियां हैं एम.ई.एस. का महकमा है इस के साथ साथ हज़ारों बंगले के हैवी डिपार्ट में फिर फ़ौजी जूते बनने लगे हैं. लाल इमली में फ़ौज के लिये ऊनी माल बनता है एलगेन मिल में फ़ौज के लिये ख़ेमे बनते हैं इसी तरह हमारे सूबे में सैकड़ों ऐसे कारख़ाने और मिलें हैं जो फ़ौज के लिये माल बनाती हैं. ऐसे मज़दूरों पर ख़ास तौर से ज़ोर देने की ज़रूरत है तब ही हम अमन तहरीक को उस मंज़िल तक पहुंचा सकते हैं जब मज़दूर तबक़ा अमन के एलानों से बढ़ कर अमन के लिये ऐक्शन के मैदान में उतर आयेगा.

६. कोमिनफ़ार्म की छटी हिदायत को हम नीचे तफ़सील में देते हैं.

"सरमायादार मुल्कों की कम्युनिस्ट और मज़दूर तबक़े की पार्टियां यह अपना फ़र्ज़ समझती हैं कि क़ौमी आज़ादी की लड़ाई को अमन की लड़ाई में जज़्ब कर दें. इन [illegible]कारों की क़ौम दुश्मन ग़द्दाराना पालीसी का डट कर भंडा फोड़ करें, जो हमलाआवर अम[illegible] साम्राज्यवाद की सीधी एजेन्ट बन गई हैं. इस शर्मनाक बन्धन को तोड़ने के लिये ज[illegible]मरीकी इजारेदारों की गुलामी के ज़रिये अपना इज़हार करता है, और ऐसी आज़ाद बाहरी अ[illegible] अन्दरूनी पालिसी के लिये जो अवाम के क़ौमी हितों के मुताबिक़ हो इन नारों [illegible]के मुल्क के तमाम मुहिब्बे वतन और जमहूरी ताक़तों को इकट्ठा किया जाये.

"यह ज़रूरी है कि सरमायेदार मुल्कों के फैले हुए अवाम को जमहूरी हक़ों और आज़ादियों की हिफ़ाज़त के लिये मुत्तहिद किया जाये. इन को अनथक तरीक़े से समझाया जाये कि अमन की हिफ़ाज़त को मज़दूर तबक़ा और मेहनतकश अवाम के बुनियादी हितों की हिफ़ाज़त और उनके सियासी और इक़्तसादी हक़ों की हिफ़ाज़त से अलग नहीं किया जा सकता

(कम्युनिस्ट जनवरी १९५० सफ़ा ११

यू.पी.टी.यू.सी. फ़्रैक्शन सेन्टर

तैयार हुआ २५.३.५०

सूबा ट्रेड यूनियन फ्रैक्शन सर्कुलर ३/५०   २०.३.५०

काला कानून विरोधी दिवस के बारे में।

प्यारे साथी, लाल सलाम

आप ~~क्रासरोड्स~~ क्रासरोड्स, मशाल और नयी ज़िंदगी में पढ़ चुके होंगे कि आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की जनरल काउंसिल ने फ़ैसला किया है कि ३ अप्रैल को सारे मुल्क में काला कानून विरोधी दिवस के मनाया जाये यानी इस मज़दूर ताल्लुक़ात बिल की मुख़ालफ़त की जाये और उसे वापस लेने की ~~इक~~ ज़ोरदार मांग की जाये जो जगजीवनराम हिन्दुस्तानी पारलीमेंट में पेश करने जा रहे हैं और जिस के मुताबिक़ मज़दूरों का हड़ताल का हक़ ख़त्म कर दिया जायेगा. मालिकों को छटनी की आज़ादी देदी जायेगी. लड़ाकू यूनियनों को कुचल कर इनटक की ज़बरदस्ती नुमाइंदा यूनियन की तरह मज़दूरों की गरदन पर लादा जायेगा और माहे चारह की हड़ताल और सियासी हड़ताल पर क़ानूनी पाबन्दी लगाकर ख़िलाफ़ क़ानूनी क़रार देदिया जायेगा, और हड़ताल करने वाले या हड़ताल का प्रचार करने वाले और ~~छे~~ काम से इनकार करने वाले मज़दूरों को ६ महीने के लिये जेल होगी और मज़दूरों, महगाई बोनस छुट्टी वग़ैरह सब ज़ब्त हो जायेगा.

हमें यक़ीन है कि आप साथियों ने इस दिन को मनाने के लिये ~~इक~~ ज़ोरदार तैयारियां शुरू करदी होंगी और इस बिल की भयानक मज़दूर दुश्मन फ़ैशिस्ट धाराओं का भंडाफोड़ आम मज़दूरों के सामने शुरू कर दिया होगा ताकि ३ अप्रैल को सारे मज़दूर एक आवाज़ से इस बिल की मुख़ालफ़त करेंगे. और मांग करेंगे कि इसे वापस लिया जाये. और दमन राज्य ख़त्म हो जलसों जलूसों और प्रदर्शनों के ज़रिये ३ अप्रैल को हज़ारों मज़दूर अपनी ज़ोरदार मुख़ालफ़त की आवाज़ उठायें

आप की कोशिश होनी चाहिये कि उस दिन की तैयारी के सिलसिले में हर ख़्याल के ~~ब~~ मज़दूरों को इस तहरीक में उत्साहित करके शामिल कीजिये ताकि इसके ख़िलाफ़ और मज़दूरों की बुनियादी मांगों के लिये एक मज़बूत मज़दूर मोर्चा बन सके जो इस बात की ज़मानत देगा कि यह लड़ाई यहींपर नहीं रुकेगी बल्कि आगे बढ़कर सूबेवार

... क़ौमी आम हड़ताल और साम्राज्य और उसके हिन्दुस्तानी ~~इक्के~~ सामन्ती और बड़े सरमायेदार दल्लालों और उनकी साझेदार कांग्रेसी सरकार के ख़िलाफ़ सच्ची आज़ादी अमन और जनवादी जनतन्त्र की लड़ाई ... कामयाबी के साथ लड़ी जायेगी ताकि मज़दूर किसानों और मेहनतकशों का सच्चा जम्हूरी राज्य क़ायम हो सके और ~~हिन्दुस्तान~~ हिन्दुस्तान समाजवाद की तरफ़ क़दम बढ़ा सके.

इस सिलसिले में इनटक, सोशलिस्ट और दूसरे सुधारवादी मज़दूर लीडरों की सरमायापरस्त मज़दूर दुश्मन, हड़ताल तोड़क हरकतों की पोल ठोस तरीक़े से खोलना चाहिये और दिखलाना चाहिये कि किस तरह एक ~~तरह~~ तरफ़ यही लीडर सरमायादारों और कांग्रेसी सरकार के साथ औद्योगिक सन्धियां करके मज़दूर तहरीक के साथ ग़द्दारी करती है और इस बार भी तीन पार्टी कांफ्रेन्स में इन लीडरों ने इस मज़दूर विरोधी बिल की बुनियादी बातें मान ली हैं, और सिर्फ़ नुमायशी मुख़ालफ़त की है और बराबर हड़तालें मुल्तवी करने और तोड़ने का काम करते हैं और दूसरी तरफ़ यह लोग मज़दूरों में फूट डालते हैं और अपने असर के मज़दूरों को लाल झंडा (ए आई टी यू सी) की लड़ाकू यूनियनों के मज़दूरों के साथ एका कर के दुश्मन के ख़िलाफ़ मज़बूत इत्तहादी मोर्चा बनाने में रुकावट डालते हैं, और हर मुमकिन तरीके से फूट डालने की कोशिश करते हैं जिस से सरमायादारों और सरकार को हमला करने और दमन से कुचलने में कामयाबियां हासिल हों और मज़दूर एक होकर ~~इकट्ठ~~ दुश्मन के हमले को रोक न सकें और अपनी हालत सुधारने के लिये लड़ाई न छेड़ सकें.

इसके बरख़िलाफ़ आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस और लाल झंडा यूनियन मज़दूरों में लड़ाकू इत्तहाद के लिये पहल और जद्दोजहद करती है और मज़दूरों की लड़ाई में अमली मदद और रहनुमाई करती है और हर मौक़े पर साम्राज्य सरमायादार और कांग्रेसी सरकार की मज़दूर विरोधी पालिसी की मुख़ालफ़त और भंडाफोड़ करती है. उन्होंने १९४८ में औद्योगिक सन्धि की मुख़ालफ़त की थी और तीन पार्टी कांफ्रेंस का बाईकाट करके चले आये जहां इस काले कानून पर बहस हो रही थी.

आप साथियों की कोशिश होनी चाहिये आपके प्रचार का यह असर हो कि कारख़ानों और शापों में सब ख़्याल के मज़दूरों की लड़ाकू कमेटियां चुनी जायें जो रोज़मर्रा की लड़ाइयों को आगे बढ़ाने के साथ साथ काले कानून की मुख़ालफ़त की तहरीक को जारी रखें और इस के लिये मज़दूर एकता को मज़बूत बनायें.

लाल सलाम

सूबा ट्रेड यूनियन फ्रैक्शन सेन्टर

1002.2

۲۰ مارچ ۵۱ء

صوبہ ٹریڈ یونین سرکلر ۳/۵۱

کالا قانون مخالف دن کے بارے میں

پیارے ساتھی!

لال سلام!

آپ نے "کراس روڈس" "شعل" اور "نئی زندگی" میں پڑھ چکے ہونگے کہ آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگ کی جنرل کاؤنسل نے فیصلہ کیا ہے کہ ۳ اپریل کو سارے ملک میں "کالا قانون مخالف دن" منایا جائے یعنی اس "مزدور تعلقات بل" کی مذمت کی جائے اور اسے واپس لینے کی زوردار مانگ کی جائے جو جگ جیون رام ہندوستانی پارلیمنٹ میں پیش کر رہے ہیں اور جسکے مطابق مزدور کا ہڑتال کا حق ختم کر دیا جائے گا۔ مالکوں کو چھٹنی کی آزادی دے دی جائے گی۔ لڑاکو یونینوں کو کچل کر انکو زبردستی نمائندہ یونین کی طرح مزدوروں کی گردن پر لادا جائے گا۔ اور بھائی چارہ کی ہڑتال کو سیاسی ہڑتال پر قانونی پابندی لگا کر خلاف قانون قرار دے دیا جائے گا۔ اور ہڑتال کرنے والے یا ہڑتال کا پرچار کرنے والے اور ہڑتالی کام سے انکار کرنے والے مزدوروں کو چھ مہینے کے لئے جیل ہوگی اور مزدوری مہنگائی، بونس، چھٹی وغیرہ سب ضبط ہو جائے گا۔

ہمیں یقین ہے کہ آپ سب ساتھیوں نے اس دن کو منانے کے لئے زوردار تیاریاں شروع کر دی ہونگی اور اس بل کی بھیانک مزدور دشمن شقوں کا بھنڈا پھوڑ عام مزدوروں کے سامنے شروع کر دیا ہوگا۔ تاکہ ۳ اپریل کو سارے مزدور ایک آواز سے اس بل کی مذمت کریں گے اور مانگ کریں گے کہ اسے واپس لیا جائے۔ اور دمن راج ختم ہو۔ جلسوں، جلوسوں اور ہڑتال کے ذریعے ۳ اپریل کو ہزاروں مزدور اپنی زوردار مخالفت کی آواز اٹھائیں۔

آپ کی کوشش ہونی چاہیے کہ اس دن کی تیاری کے سلسلہ میں ہر فیکٹری کے مزدوروں کو اس تحریک میں جوش دلا کر شامل کیجیے۔ تاکہ اس کے خلاف اور مزدوروں کی بنیادی مانگوں کے لئے ایک مضبوط مزدور مورچہ بن سکے جو اس بات کی ضمانت دیگا کہ یہ لڑائی یہیں پر نہیں رکے گی بلکہ آگے بڑھ کر صوبہ وار، قومی عام ہڑتال اور سامراج اور اسکے ہندوستانی جاگیردار اور بڑے سرمایہ دار دلالوں اور انکی ساجھیدار کانگریس سرکار کے خلاف سچی آزادی، امن اور عوامی جمہوریت کی لڑائی کے ساتھ لڑی جا سکے گی۔ تاکہ مزدور، کسانوں اور محنت کشوں کا سچا جمہوری راج قائم ہو سکے اور ہندوستان سوشلزم کی طرف قدم بڑھا سکے۔

اس سلسلہ میں انٹک، سوشلسٹ اور دوسرے سمجھوتہ وادی مزدور لیڈروں کی مزدور دشمن ہڑتال توڑ کرتوتوں کی پول کھلے طریقہ سے کھولنا چاہیے۔ اور دکھلانا چاہیے کہ ایک طرف یہی لیڈر سرمایہ داروں اور کانگریسی سرکار کے ساتھ صنعتی صلح کر کے مزدور تحریک سے غداری کرتے ہیں اور اسی بات کی تین پارٹی کانفرنس میں ان لیڈروں نے اس مزدور دشمن بل کی حمایت کی ہے (جیسا کہ ہم نے مان لی ہیں) اور صرف نمائشی مخالفت کی ہے اور برابر ہڑتالیں ملتوی کرنے اور توڑنے کا کام کرتے ہیں اور دوسری طرف یہ لوگ مزدوروں میں پھوٹ ڈالتے ہیں

اور اپنے اثر کے مزدوروں کو لال جھنڈا (اے۔آئی۔ٹی۔یو۔سی) کی لڑاکو یونینوں کے مزدوروں کے ساتھ ملکر دشمن کے خلاف مضبوط اتحادی مورچہ بنانے میں رکاوٹیں ڈالتے ہیں۔ اور ہر ممکن طریقے سے پھوٹ ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں جسمیں سرمایہ داروں اور سرکار کو حملہ کرنے میں سے بچنے میں کامیابیاں حاصل ہوں اور مزدور ایک ہو کر دشمن کے حملوں کو ہرا نہ سکیں اور اپنی حالت سدھارنے کیلئے لڑائی نہ چھیڑ سکیں۔

اسکے برخلاف آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس مزدوروں کی لڑاکو اتحاد کیلئے پہل اور جد و جہد کرتی ہے اور مزدوروں کی لڑائی میں عملی مدد اور رہنمائی کرتی ہے اور مدد کرتی ہے اور ہر موقع پر سامراجی سرمایہ دار اور کانگریس سرکار کی مزدور دشمن پالیسی کی مخالفت اور بھنڈا پھوڑ کرتی ہے۔ انھوں نے ۱۹۴۸ء میں صنعتی صلح کی مخالفت کی تھی اور تین پارٹی کانفرنس ترک کر کے چلے آئے جہاں اس کالے قانون پر بحث ہو رہی تھی۔ شامل ہوں

آپ ساتھیوں کی کوشش ہونی چاہیے آپ کے پرچار کا یہ اثر ہو کہ کارخانوں اور شاپوں میں سب یونین کی لڑاکو کمیٹیاں چنی جائیں۔ جو روز مرہ کی لڑائیوں کی اگوائی کرنے کے سلسلہ میں ساتھ ہی کالے قانون مخالف کی تحریک کو جاری رکھیں اور اسکے لئے مزدوروں کے اتحاد کو مضبوط بنائیں۔

صوبہ ٹریڈ یونین فریکشن سنٹر

صوبہ ٹریڈ یونین فرنٹ سرکلر نمبر ۵ — ۲۳ / مارچ

اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی۔ ہفتہ کے بارے میں

پیارے ساتھی۔

لال سلام۔

آپکو نیا سویرا سے معلوم ہو چکا ہوگا کہ صوبہ ٹریڈ یونین کنونشن نے طے کیا ہے کہ ۵ اپریل سے ۱۲ اپریل تک "آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس ہفتہ" منایا جائے۔

اس ہفتہ میں۔

— اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کی انقلابی روایات اور [illegible] سال کی لڑائی اور رہنمائی کی ٹھوس اصلیت عام مزدوروں تک پہنچائی جاوے اور ان لڑائیوں اور کامیابیوں کو بتلایا جائے جنکی رہنمائی اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کی ماتحت یونینوں نے کی ہے۔

— بنیادی مانگوں اور قومی عام ہڑتال کی تجویز عام مزدوروں میں پرچار کیا جائے اور ہر جگہ جلسوں جلوسوں مظاہروں میں اسے دوہرایا جائے۔

باہری یونینوں کو راضی کیا جائے کہ وہ آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس سے تعلق قائم کریں۔

— اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی۔ فنڈ کا چندہ جمع کیا جائے۔ اور سارا چندہ اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کو [illegible] الحاقی فیس چکائی جائے۔

— ٹریڈ یونین ریکارڈ کے کاپی بنائے جائیں اور اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کی سالانہ تحریک کانفرنس کی روداد کی ہندی کاپیاں مزدوروں میں بانٹی جائیں۔

اسکے مقابلہ میں انٹک، سوشلسٹ، نیشنلسٹ سبھا اور دوسرے سدھار وادی مزدور لیڈروں اور انکے والی یونینوں، فیڈریشنوں وغیرہ کا بھنڈا پھوڑ کیا جائے۔ انکی سرمایہ پرست مزدور دشمن ہڑتال توڑک، انکا جوڑ توڑ پالیسی کی پول کھولی جائے۔ (۱۹ مارچ پچھلی مزدور تحریک۔ حیدرآباد عام ہڑتال، سوتی مزدور عام ہڑتال وغیرہ کی مثالیں دے سکتے ہیں)

پچھلے [illegible] انٹک، سوشلسٹ اور دوسرے سدھار وادی کام کرنے والے لیڈروں کے اثر کی یونینوں کے مزدوروں سے اپیل کی جائے کہ وہ آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس کی یونینوں اور انکے ممبروں کے ساتھ لڑائی لڑیں تاکہ سب متحد مالکوں اور سرکار کے حملوں اور دھاووں کو روک سکیں اور اپنی مانگوں کیلئے کامیاب لڑائی چلا سکیں اور بنیادی مانگوں کیلئے عام ہڑتال کی طرف قدم بڑھا سکیں۔

جلسوں، جلوسوں اور مظاہروں میں تجویز پاس کرکے اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کی یونینوں اور اسکے کارکنوں ممبروں کے خلاف ہڑتالی دمن بند کیا جائے۔ حیدرآباد اور بنگال میں یونینوں پر سے روک ہٹائی جاوے۔ اور سرکار اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کو ہندوستانی مزدور ورگ کی نمائندہ تنظیم تسلیم کرلے اور انٹک کو جو سرمایہ داروں اور سرکار کی ہڑتال توڑک اور ایکتا توڑک تنظیم ہے نمائندہ ماننا بند کردے۔ اور اس کالے قانون کو واپس لیوے جسکے مطابق ہڑتالوں کے خلاف قانون بنایا گیا ہے۔ اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کی لڑاکو یونینوں کو غیر قانونی قرار دیکر آئی۔ این۔ ٹی۔ یو۔ سی کو مزدوروں کی نمائندگی کا اجارہ دیا جانے والا ہے تاکہ مالکوں اور سرکار کے حملوں کا مقابلہ کمزور کر دیا جائے۔ چھٹنی، کام بڑھانا، تنخواہ کٹوتی اور دمن کو کامیاب بنایا جائے۔ اور سامراج اور اسکے ہندوستانی جاگیردار اور بڑے سرمایہ داروں اور دلالوں کا لڑکھڑاتا ڈھانچہ کچھ دن اور [illegible] سے بچ سکے۔

اس ہفتہ کے پرچار [illegible] کا مطلب یہ ہونا چاہئے کہ عام مزدور آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس کو مزدوروں کی لڑاکو حمایتی لیڈر اور سنگٹھن کرتا اس طرح دیکھنے لگیں۔ اسکی بنیادی مانگوں اور قومی عام ہڑتال کی تجویز کی حمایت کریں اور اس بات کو محسوس کرنے لگیں کہ اے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کے اندر [illegible] کے مزدوروں کے ساتھ لڑائی کو [illegible] بنا کر ہی مزدور ورگ اپنے طبقہ کے مفاد کی اثردار حفاظت کر سکتا ہے۔ اپنی بنیادی مانگوں (یعنی نوکری، جینے لائق مزدوری، پوری مہنگائی۔ [illegible] کا بونس، مزدور سبھائی اور جمہوری آزادیوں کی بحالی۔ نظربندوں کی رہائی اور کالے قانونوں کا رد کیا جانا وغیرہ) کیلئے قومی عام ہڑتال کی تیاری کے ساتھ جلدی جا سکتی ہے۔

— صوبہ ٹریڈ یونین سنٹر

सूबा ट्रेड यूनियन फ्रैक्शन सर्कुलर नं० ४/५० २३.३.५०

ए.आई.टी.यू.सी. हफ्ते के बारे में।

प्यारे साथी, लाल सलाम

आप को नया सवेरा से मालूम हो चुका होगा कि सूबा ट्रेड यूनियन कनवेन्शन के० ने ते किया है कि ५ अप्रैल से १२ अप्रैल तक आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस हफ्ता मनया जाये.

इस हफ्ते में, ए आई टी यू सी की इनक़लाबी रिवायात और मौजूदा लड़ाकू पहल और रहनुमाई की ठोस असलियत आम मज़दूरों तक पहुँचाई जाये और इन लड़ाइयों और कामयाबियों को बताया जाये जिनकी रहनुमाई ए आई टी यू सी से संबंधित यूनियनों ने की है.

बुनियादी मांगों और क़ौमी आम हड़ताल की तजवीज़ आम मज़दूरों में प्रचार किया जाये और हर जगह जलसों जुलूसों और प्रदर्शनों में उसे दुहराया जाये.

ग़ैर संबंधित यूनियनों को राज़ी किया जाये कि वह आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस से संबंधित हो जाये.

ए आई टी यू सी फ़न्ड में चन्दा जमा किया जाये. और सारा चन्दा ए आई टी यू सी को भेज कर अपनी संबंध फ़ीस चुकाई जाये.

ट्रेड यूनियन रिकार्ड के गराहक बनाये जायें और ए आई टी यू सी की सालाना बम्बई कांफ़्रेंस की रिपोर्टों की हिन्दी कापियां मज़दूरों में बेची जाये.

इस के मुक़ाबले में इनटक, सोशलिस्ट, शिब्बन लाल सक्सेना और दूसरे सुधारवादी मज़दूर लीडरों और उनके असर वाली यूनियनों, फ़ेडरेशनों वग़ैरह का भंडाफोड़ किया जाये. उनकी सरमाया परस्त मज़दूर दुश्मन हड़ताल तोड़क एका फोड़क पालीसी की ठोस पोल खोली जाये.

: ६ मार्च चीनी मज़दूर तेहरीक, हैदराबाद आम हड़ताल, सोती मज़दूर आम हड़ताल वग़ैरा की मिसालें दी जायें.

पिछड़े हुए और इनटक सोशलिस्ट और दूसरे सुधारवादी मज़दूर लीडरों के असर की यूनियनों के मज़दूरों से अपील की जाये कि वह आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के यूनियनों और उनके मेम्बरों के साथ लड़ाकू ए० मोर्चा बनायें ताकि सब मिल कर मालिकों और सरकार के हमलों और दमन को हरा सकें और अपनी मांगों के लिये कामयाब लड़ाई चला सकें और बुनियादी मांगों के लिये आम हड़ताल की तरफ़ क़दम बढ़ा सकें.

जलसों जुलूसों और प्रदर्शनों में तजवीज़ें पास करके ए आई टी यू सी की यूनियनों और उनके कारकुनों और मेम्बरों के खिलाफ़ हिटलरी दमन बन्द किया जाये, मद्रास, बंगाल, में यूनियनों पर से रोक हटाई जाये और सरकार ए आई टी यू सी को हिन्दुस्तानी मज़दूर वर्ग की नुमाइन्दा क़ौमी संस्था तसलीम करले और इनटक को जो सरमायेदारों और सरकार की हड़ताल तोड़क और एका फोड़क एजन्सी है नुमाइन्दा मानना बन्द करदे और इस काले कानून को वापस ले जिस के मुताबिक़ हड़तालों को खिलाफ़ क़ानून बना दिया गया है ए आई टी यू सी की यूनियनों को ग़ैर क़ानूनी क़रार देकर आई एन टी यू सी को मज़दूरों की नुमाइन्दगी का इजारा दिया जाने वाला है ताकि मालिकों और सरकार के हमलों का मुक़ाबिला कमज़ोर कर दिया जाये, छंटनी काम बढ़ौती, तनख्वाह कटौती और दमन को कामयाब बनाया जाये और साम्राज्य और बड़े हिन्दुस्तानी सामन्ती और बड़े सरमायादार दल्लालों का लड़खड़ाता ढांचा फ़ौरी मौत से बच सके.

इस हफ्ते के प्रचार आन्दोलन का मतलब यह होना चाहिये कि आम मज़दूर आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस को मज़दूरों के लड़ाकू हिमायती लीडर और संगठन करता की तरह देखने लगें, उसकी बुनियादी मांगों और क़ौमी आम हड़ताल की तजवीज़ का समर्थन करें और इस बात को महसूस करने लगें कि ए आई टी यू सी के लाल झंडे के मज़दूरों के साथ लड़ाकू मोर्चा बनाकर ही मज़दूर वर्ग अपने वर्गीय हितों की असरदार रक्षा कर सकता है अपनी बुनियादी मांगों को पक्की नौकरी, जीने लायक़ मज़दूरी पूरी महंगाई, साढ़े चार महीने का बोनस, मज़दूर सभाओं और जमहूरी आज़ादियों की बहाली, नज़र बन्दों की रिहाई और काले क़ानूनों का खतम किया जाना वग़ैरा: के लिये क़ौमी आम हड़ताल कामयाबी के साथ चलाई जा सकती है.

सूबा ट्रेड यूनियन सेन्टर

[illegible]र हुआ २७.३.५०

सूबा ट्रेड यूनियन फ्रैक्शन सर्कुलर न० ५/५० २५.३.५०

सूबा अमन कमेटी की मीटिंग के बारे में।

प्यारे साथियो, लाल सलाम

आप को अमन कमेटी की मीटिंग के बारे में प्रोसेक्ट का सर्कुलर मिल चुका होगा, जिसमें बताया गया है कि यह मीटिंग ९ अप्रैल को लखनऊ में होने जा रही है आपको सूबा फ्रैक्शन के सर्कुलर से यह भी मालूम हो चुका होगा कि आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की जनरल काउन्सिल ने फ़ैसला किया है कि २३ अप्रैल से पहली मई तक तमाम मुल्क में अमन हफ़्ता मनाया जाये.

हर यूनियन का फ़र्ज़ है कि इस मीटिंग को पूरी तरह कामयाब बनाने की हर मुमकिन कोशिश करे.

अपनी जनरल काउन्सिल या वर्किंग कमेटी की मीटिंग बुलाकर उसमें आलमगीर अमन कमेटी की रूम मीटिंग के प्रस्ताव और फ़ैसलों को दुहराना चाहिये और वहाँ यह तजवीज़ पास करना चाहिये कि यूनियन सूबा अमन कमेटी से सम्बन्धित होने के लिये दरख़्वास्त दे और ९ अप्रैल की मीटिंग के लिये नुमाइन्दा चुने और सम्बन्धी फ़ीस रवाना करे.

२३ अप्रैल से पहली मई तक अमन हफ़्ता के लिये प्रचार आन्दोलन का एक प्रोग्राम तैयार किया जाये और हर कारख़ाना, शाप और दफ़्तर में अमन कमेटियाँ बनाने का आन्दोलन शुरू किया जाये.

अमन आन्दोलन का लिटरेचर बेचा जाये और अख़बार "अमन की हिफ़ाज़त के लिये" के गाहक बनाये जायें.

मुख़्तलिफ़ मज़दूर सभाओं और जनसंस्थाओं और कारख़ानों वग़ैरा के नुमाइन्दों को बुला कर एक मुक़ामी अमन कमेटी बनाई जाये, और अमन आन्दोलन का प्रोग्राम बनाया जाये, और जहाँ जहाँ अभी अमन कांफ़्रेन्स नहीं हुई है वहाँ अमन कांफ़्रेन्स की तैयारी शुरू की जाये.

हमें उम्मीद है कि आप फ़ौरन ही इस सिलसिले में अमली तैयारियाँ शुरू कर देंगे और कोमिनफ़ार्म और आलमगीर अमन कमेटी की रूम मीटिंग की तजवीज़ों, आल इन्डिया अमन कमेटी, आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस, सूबा अमन कमेटी के फ़ैसलों के मुताबिक़ प्रोसेक्ट और फ्रैक्शन की हिदायतों पर ~~ठठठठ~~ अमल करते हुये ~~ठठठ~~ ज़ोरदार अमन तहरीक शुरू कर देंगे.

सूबा ट्रेड यूनियन फ्रैक्शन सेन्टर

* * *

۲۴ مارچ ۵۰ء

صوبہ ٹریڈ یونین فریکشن سرکلر نمبر ۵

صوبہ امن کمیٹی کی میٹنگ کے بارے میں

پیارے ساتھیو! لال سلام

آپ کو امن کمیٹی کی میٹنگ کے بارے میں پروسکٹ کا سرکلر مل چکا ہوگا جسمیں بتایا گیا ہے کہ یہ میٹنگ ۹ اپریل کو لکھنؤ میں ہونے جا رہی ہے۔ آپ کو صوبہ فریکشن کے سرکلر سے یہ بھی معلوم ہو چکا ہوگا کہ آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس کی جنرل کاؤنسل نے فیصلہ کیا ہے کہ ۲۳ اپریل سے پہلی مئی تک تمام ملک میں "امن ہفتہ" منایا جائے۔

ہر یونین کا فرض ہے کہ اس میٹنگ کو پوری طرح کامیاب بنانے کی ہر ممکن کوشش کرے۔

اپنی جنرل کاؤنسل یا ورکنگ کمیٹی کی میٹنگ بلا کر اسمیں عالمگیر امن کمیٹی کی روم میٹنگ کے پرستاؤ اور فیصلوں کو دہرانا چاہئے اور وہاں یہ تجویز پاس کرنا چاہئے کہ یونین صوبہ امن کمیٹی کے ساتھ ملحق ہونے کے لئے درخواست دے اور ۹ اپریل کی میٹنگ کے لئے نمائندہ چنے اور ملحقی فیس روانہ کرے۔

۲۳ اپریل سے پہلی مئی تک امن ہفتہ کے لئے پرچار اندولن کا ایک پروگرام تیار کیا جائے اور ہر کارخانہ، شاپ اور دفتر میں امن کمیٹیاں بنانے کا اندولن شروع کیا جائے۔

امن اندولن کا لٹریچر بیچا جائے اور اخبار "امن کی حفاظت کے لئے" کے گاہک بنائے جائیں۔

مختلف مزدور سبھاؤں اور عوامی انجمنوں اور کارخانوں وغیرہ کے نمائندوں کو بلا کر ایک مقامی امن کمیٹی بنائی جائے اور امن اندولن کا پروگرام بنایا جائے اور جہاں جہاں ابھی امن کانفرنس نہیں ہوئی ہے وہاں امن کانفرنس کی تیاری شروع کی جائے۔

ہمیں امید ہے کہ آپ فوراً ہی اس سلسلہ میں عملی تیاری شروع کر دیں گے اور کومن فارم اور "عالمگیر امن کمیٹی" کی روم میٹنگ کی تجویزوں، آل انڈیا امن کمیٹی، آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس، صوبہ امن کمیٹی کے فیصلوں کے مطابق پروسکٹ اور فریکشن کی ہدایتوں پر عمل کرتے ہوئے زوردار امن تحریک شروع کر دیں گے۔

आल-हिन्द ट्रेड यूनियन कांग्रेस से सम्बंध जोड़ने के बारे में

प्यारे साथी,

इस सर्कुलर के साथ हम कुल-हिन्द ट्रेड यूनियन कांग्रेस से (खेत मज़दूर यूनियनों का) सम्बंध जोड़ने के लिये फ़ार्म और दरख़्वास्त की नक़ल और नियम दे रहे हैं. आप फ़ौरन ही अपनी ज़िला यूनियन की कार्यकारिणी की मीटिंग बुलायें और यूनियन को कुल-हिन्द संस्था से जोड़ने के लिये फ़ौरी क़दम उठायें. अगर कार्यकारिणी की मीटिंग फ़ौरन न हो सकती हो या मीटिंग होने में दिक़्क़तें हों तो सेक्रेट्री और सदर को मिल कर फ़ैसला ले लेना चाहिये और बाद को कार्यकारिणी से मंज़ूर करा लीजियेगा. असल में सम्बंध जोड़ने का मामला फ़ौरी है और उसमें देर नहीं होनी चाहिये. खेत मज़दूरों को शहरी मज़दूरों से अपना भाईचारा स्थापित करना और सामूहिक जनवादी लड़ाकू संस्था आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस से गहरा नाता क़ायम करना हर हालत में ज़रूरी है मगर आज इस काम की फ़ौरी अहमियत इस लिये बढ़ गई है कि साम्राज्यियों के इशारे पर काम करने वाली प्रतिक्रियावादी कांग्रेसी सरकार ट्रेड यूनियन कांग्रेस पर वहशियाना हमलों पर उतर आई है और देश के अन्दर और बाहर अपने गुर्गों, इनटक वालों और सोशलिस्ट दल्लालों के ज़रिये मज़दूर आन्दोलन में फूट फैलाने में जुट गई है. ज़ाहिर है यह चालें कामयाब नहीं होंगी, क्योंकि हिन्दुस्तान का क्रान्तिकारी मज़दूर वर्ग इन चालों का विरोध करता है. मगर इस विरोध को संगठन की शक्ल में खड़ा करना ज़रूरी है और इसी लिये खेत मज़दूरों के संगठित भाग को फ़ौरन आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में शामिल होना चाहिये ताकि प्रतिक्रियावादियों को क्रान्तिकारी मज़दूरों की असली शक्ति का लोहा मानना पड़े. हज़ारों हज़ार खेत मज़दूरों के शामिल होने से ट्रेड यूनियन कांग्रेस की आवाज़ और भी भारी पड़ेगी उसका प्रभाव बढ़ेगा. और वह अन्दर और बाहर हिन्दुस्तान के मज़दूरों की नुमाइन्दगी करने के अधिकार के लिये और कामयाबी से संघर्ष कर सकेगी. इसके अलावा सम्बंध जोड़ने से खुद हमको क्रान्तिकारी रहनुमाई मिलेगी और औद्योगिक मज़दूरों के तजर्बे से खेत मज़दूर पूरा फ़ायदा उठा सकेंगे.

दरख़्वास्त और चन्दा जो आप केन्द्रीय दफ़्तर में भेजेंगे उसकी एक कापी सूबा ट्रेड यूनियन कांग्रेस दफ़्तर, मारफ़त, मज़दूर सभा दफ़्तर, गवाल टोली, कानपुर और एक कापी सूबा खेत मज़दूर यूनियन दफ़्तर, ३२, लाटूश रोड, लखनऊ आनी चाहिये. ताकि न सिर्फ़ सूबाई संस्थाओं को आपकी तनज़ीमी हालत की जानकारी रहे बल्कि इधर से आपके सम्बंध के लिये सिफ़ारिश भी की जा सके.

आप का यह भी फ़र्ज़ है कि नीचे पूछे गये सवालों का उत्तर फ़ौरन सूबा खेत मज़दूर दफ़्तर भेजें, उत्तर की एक कापी सूबा ट्रेड यूनियन कांग्रेस आफ़िस को भी भेजी जानी चाहिये.

१. आपके यहां खेत मज़दूर यूनियन कब बनी?
२. यूनियन के पदाधिकारी कौन कौन हैं और उसकी कार्यकारिणी के कौन २ मेम्बर हैं?
३. पूरे ज़िले में खेत मज़दूर यूनियन के कितने मेम्बर हैं?
४. मेम्बरी फ़ीस कितनी रक्खी गई है?
५. सूबा कांफ़्रेन्स के बाद आप ने मेम्बरी फ़ीस बदली या नहीं?
६. यूनियन का खुला हुआ दफ़्तर है या नहीं, अगर है तो उसका पता और अगर नहीं है तो कब तक खोल रहे हैं?
७. आप ने कोई ज़िला कांफ़्रेन्स की? कब? उसकी कार्रवाई?
८. ज़िले के कितने गांव में यूनियन का काम होता है.
९. क्या कुछ बड़े बड़े फ़ार्म भी हैं जिन के मज़दूर यूनियन में संगठित हैं? कितने बड़े बड़े फ़ार्म? मज़दूरों की तादाद? कहां कहां और कितने?
१०. किसान सभा से यूनियन का ताल्लुक़ क्या है? सामूहिक सवालों पर काम करने का ढंग क्या होता है?
११. यूनियन की कितनी कमेटियां पूरे ज़िले में काम करती हैं?
१२. यूनियन की मुख्य २ मांगें क्या हैं?
१३. खेत मज़दूरों की मज़दूरी (मुख्तलिफ़ कामों की अलग अलग [illegible]) खेत

कितना मिला हुआ है ? क़र्ज़ का बोझ कितना है और यूनियन की ओर से फ़ौरन कितनी मज़दूरी और खेत के लिये संघर्ष होरहा है।

१४ . मज़दूरों के मुतल्लिक आम हालात पर रिपोर्ट और मुख्तसर उनके संघर्षों (संगठित, व स्वयं प्रेरित) की इत्तला ?

१५ . और कोई खास बात ?

इन सवालों का फ़ौरन उत्तर आना ज़रूरी है इसके बग़ैर यह मालूम करना नामुमकिन है कि खेत मज़दूर संगठन की हालत हमारे सूबे में क्या है, और इस हालत के मालूम हुये ज़िलों को मुनासिब हिदायत और रहनुमाई देना मुमकिन नहीं है.

तमाम ज़िलों की इकाइयों का यह फ़र्ज़ है कि सूबा संगठन का खर्च चलाने के लिये मेम्बरी फ़ीस का सूबा हिस्सा फ़ौरन अदा करना शुरू करदें. सूबा कान्फ़्रेन्स में पास किये गये विधान के मुताबिक यह हिस्सा चार आने में एक आना (चौथाई) मुकर्रर किया गया है यानी आप जितनी फ़ीस मेम्बरों से वसूल करते हैं उसका चौथाई भाग सूबा दफ़्तर को देंगे. यह अदायगी महीने महीने होनी चाहिये, जैसे जैसे आप मेम्बर बनाते जायेंगे उनकी फ़ीस का सूबाई हिस्सा हम को भेजते जायेंगे. मेम्बरी फ़ीस के संबंध में एक ज़रूरी बात यह है कि सूबा कान्फ़्रेन्स ने एक रूपया सालाना फ़ीस मुकर्रर की थी. अब आल इन्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने खेत मज़दूर यूनियनों के लिये रियायत कर दी है और एक रुपया के बजाये ८ आने फ़ीस कम से कम मुकर्रर की है इसका मतलब यह नहीं होता कि एक रुपया अगर कोई ज़िला इकाई मुकर्रर करना चाहता है तो वह गलत होगा. वैसे ज्यादा से ज्यादा खेत मज़दूरों को यूनियनों में संगठित करने के लिये ८ आने फ़ीस से ज्यादा आसानी होगी . इस लिये ज़िला इकाइयों को यह अख्तियार है कि नये साल की मेम्बरी अगर वह चाहे तो ८ आने फ़ी मेम्बर के हिसाब से कर सकती हैं. आप जो भी फ़ीस मुकर्रर करें वह ८ आने से कम नहीं होगी और उसकी इत्तला सूबा दफ़्तर को फ़ौरन हो जानी चाहिये.

एक बात और, अब तक ज़िला इकाइयों को अलग अलग कुल हिन्द ट्रेड यूनियन कांग्रेस से संबंधित कराया जा रहा है मगर ज़रूरत समझी गई तो केन्द्रीय दफ़्तर से बात चीत करने बाद ज़िले ज़िले से आँकड़े और संगठनात्मक इत्तलाआत आजायेंगी तो सूबे भर की केन्द्रीय यूनियन का संबंध ट्रेड यूनियन कांग्रेस से जोड़ दिया जायेगा . पर यह बाद की बात है इस वक्त तो आप को फ़ौरन ही अपनी अपनी यूनियनों को संबंधित करा लेना है.

संबंध जोड़ने का फ़ार्म और नियम आपकी आसानी के लिये दो दो भेजे जा रहे हैं. ज़रूरत पड़ने पर आप हाथ से नक़ल करके काम चला सकते हैं.

लाल सलाम

सेक्रेट्री , सूबा खेत मज़दूर यूनियन
३२, लाटूश रोड , लखनऊ

नोट . खत व किताबत सूबा खेत मज़दूर यूनियन दफ़्तर से शुरू कीजिये . आन्दोलन कैसे चल रहा है? हड़तालें कहाँ कहाँ और किस तेज़ी से होरही हैं, लड़ाइयों का स्वरूप क्या है? संगठन किस पैमाने पर हो रहा है दमन और फूट परस्त पार्टियों का क्या हाल है? इन सब सवालों और काम के प्रश्नों पर रिपोर्ट हर पन्द्रह रोज़ में एक बार ज़रूर आनी चाहिये . जो कठिनाइयाँ काम के दौरान में पेश आती हैं उन्हें सूबा दफ़्तर के सामने ज़रूर रखिये और अपने दफ़्तर का पता दीजिये ताकि आपको जवाब दिया जासके. कुल-हिन्द ट्रेड यूनियन कांग्रेस से संबंध जोड़ने के प्रश्न पर अगर कोई बात समझ में न आये तो सूबा दफ़्तर को लिखकर पूछ लीजिये. एक बात यह भी बतायें कि मेम्बरी रसीदें आपके यहाँ काफ़ी हैं या नहीं? अगर नहीं है तो क्या आप खुद छपवा सकते हैं या हम छपवायें?

सेक्रेट्री

आल इन्डिया यूनियन आफ़ रेलवे वर्कर्स
ए.आई.यू.आर.डब्लू. सर्कुलर नं० ३६/५०

जी.आई.पी. रेलवे म्यन्स यूनियन
नेपून बिल्डिंग
हार्नबी रोड, बाम्बे
३ मार्च १९५०

②

अर्जेन्ट सर्कुलर

प्रिय साथियों

यह बड़े अफ़सोस की बात है कि हमें ६ मार्च की हड़ताल वापस लेने का फ़ौरी फ़ैसला लेना पड़ रहा है. हड़ताल के बजाये हम ६ मार्च को रेलवे मज़दूरों के इत्तहादी जलसों व प्रदर्शनों की पुकार देते हैं जो रेलवे बोर्ड की तरफ़ से होने वाले छटनी और दूसरे हमलों के खिलाफ़ किए जाएं.

यह फ़ैसला हमारे ऊपर अलग २ केन्द्रों की रिपोर्टों ने आयद किया है. इन रिपोर्टों से यह बात साफ़ हो जाती है कि बावजूद आम रेलवे मज़दूरों में सरकार के खिलाफ़ ज़बरदस्त गुस्से के और बावजूद इस बात के कि आम रेलवे मज़दूर ज़्यादा से ज़्यादा इस बात को महसूस करते जा रहे हैं कि मौजूदा हालत के खिलाफ़ आम हड़ताल ही एक रास्ता है हम उन ज़बरदस्त मुश्किलों पर काबू नहीं पा सके हैं जो सरकारी दमन की वजह से हमारे रास्ते में पैदा हो गई हैं. हम आम रेलवे मज़दूरों के साथ अपने सम्बन्ध नए सिरे से नहीं जोड़ पाए हैं और न ऐसा संगठन खड़ा कर सके हैं जो दमन का मुकाबला कर सके और मज़दूरों को उसे हराने में मदद दे.

इस का नतीजा यह है कि हम मज़दूरों के बहुमत के बीच हड़ताल की आवाज़ को नहीं पहुंचा सके हैं. यह उन रिपोर्टों से ज़ाहिर होता है जो हमारे पास पहुंची हैं.

साउथ इन्डियन रेलवे में आल इन्डिया यूनियन आफ़ रेलवे वर्कर्स की हड़ताल कमेटी ने कुछ मुकामी शिकायतों के खिलाफ़ १७ फ़रवरी को हड़ताल का नारा दिया. इस हड़ताल को होने से पहिले ही कुचलने के लिये सरकार ने का० कल्यान सुन्दरम का० सुब्रमन्यम और दूसरे १०८ साथियों को त्रिचनापल्ली में गिरफ़्तार कर लिया.

बम्बई में हाल ही में कई साथी गिरफ़्तार कर लिये गये हैं. और हम कामयाबी के साथ हड़ताल का प्रचार और उसकी तैयारी नहीं कर सके.

मध्य भारत में हाल ही में होने वाली गैंग मैनों की कांफ़्रेन्स पर सख़्त हमले के बाद ६ मार्च का प्रचार मुश्किल हो गया है और मज़दूरों से दुबारा सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सका.

इसी तरह की रिपोर्टें टुंडला, ई.आई.आर. यू.पी. से आई हैं जहां का ज़िम्मेदार साथी पकड़ लिया गया है. और काम ठप हो गया है. बंगाल में साम्प्रदायिक दंगों ने हमारे ट्रेड यूनियन काम को चोट पहुंचाई है और वहां साथियों को ज़बरदस्त मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है.

यू.पी. में रेलवे कांफ़्रेन्स पर सख़्त हमला किया गया और २१ साथी बन्द कर दिये गये.

इस तरह तमाम सूबों में लड़ाकू मज़दूरों की गिरफ़्तारियों, अखबारी प्रचार पर रुकावट और इसी तरह की दूसरी मुश्किलें पैदा की गईं.

इन गिरफ़्तारियों और दमन ने हड़ताल का प्रचार और तैयारी को असंगठित कर दिया. सिर्फ़ एक ही संगठन इस दमन के सामने टिक सकता है और उसके परखचे उड़ा सकता है और वह है फ़ैक्टरी, शाप, शेड, स्टेशन, और डिपार्टों के अन्दर बनाया हुआ संगठन. यह संगठन हम अभी तक नहीं बना सके हैं.

ऐसी हालत में ६ मार्च को कोई कामयाब हड़ताल मुमकिन नहीं मालूम होती और इस लिये हड़ताल की जगह ६ मार्च को इत्तहादी प्रदर्शन और जलसे ज़रूरी हो जाते हैं. यही एक कदम है जो हमारी ताक़तों को संगठित करेगा और एके के मकसद को आगे बढ़ाने और इस के ज़रिये जल्दी लड़ाई छेड़ने और ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में रेलवे मज़दूरों को लड़ाई में खींचने में हमारी मदद करेगा. इस लिये यह बहुत ज़रूरी हो गया है कि ६ मार्च की विरोधी हड़ताल वापस ली जाये और इस के बदले प्रदर्शनों और जलसों की पुकार दी जाये.

यह सच है कि बहुत सी जगहों में दमन और फूट की कोशिशों के बावजूद मज़दूरों ने हड़ताल की तैयारी की होगी. और उन्हें ६ मार्च की हड़ताल वापस लेने पर मायूसी होगी. लेकिन सारे हिन्दुस्तान की परिस्थिति और उस भीषण दमन को देखते हुए जो हमारी यूनियनों को खत्म कर देना चाहता है यह ज़रूरी हो जाता है कि हम आरज़ी तौर पर पीछे हट जायें, और इत्तेहादी प्रदर्शनों की पुकार दें. मज़दूर यकीनन इस कदम को ठीक समझेंगे.

आज हालत बहुत नाज़ुक है आम छटनी का हमला बढ़ रहा है अभी पिछले हफ़्ते रेलवे वज़ीर ने खुले तौर पर पार्लीमेन्ट में एलान किया कि वह सितम्बर १९४५ के बाद रखे गये कर्मचारियों को नौकरी नहीं दे सकते इस के अलावा तनख्वाहों पर हमले, आम बाढ़, गैंग के फ़ासलों को बढ़ती

और मज़ूरी वगैरा रोज़बरोज़ घटती जाती है.

ऐसी हालत में मज़दूरों के सामने बुनियादी मांगों के लिये कुल-हिन्द आम हड़ताल ही एक मात्र रास्ता है. हर डिपार्टमेंट के मज़दूर इस बात को महसूस करते हैं.

यह हमारी और सिर्फ़ हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम हर हमले के खिलाफ़ मज़दूरों को मुकाबले के लिये संगठित करें इस मुकाबले में उनकी अगुवाई करें और कुल-हिन्द रेलवे हड़ताल की तैयारी करें.

इस लिये ज़रूरत इस बात की है कि देश-व्यापी लड़ाई की तैयारी तेज़ी के साथ की जाए. इस के लिये हमको हर जगह फ़ैक्टरी, शाप कमेटियां और दूसरे लड़ाकू संगठन बनाने का काम चालू करना चाहिये जिससे हमारे लिये दमन और फूट के हमलों को परास्त करना और सारे मज़दूरों को लड़ाई के लिये एक ताकतवर मुत्तहिदा मोर्चे में जोड़ना मुमकिन और आसान हो जाएगा.

इस लिये ६ मार्च को जलसे और प्रदर्शन करें, बुनियादी मांगों को दुहराओ कांग्रेसी सरकार की नीति की निंदा करो, दमन राज खत्म करने की आवाज़ दो. सोशलिस्ट और इनटक नेताओं की फूट वादी और हड़ताल विरोधी कामों का भंडाफोड़ करो और सारे मज़दूरों का छटनी के खिलाफ़ और बुनियादी मांगों के लिये साथ २ लड़ने के लिये संयुक्त करो.

हर जलसे और प्रदर्शन में यह बात दिमाग में भर देना चाहिये कि मज़दूरों का ताकतवर एका इस वक्त बहुत ज़रूरी है. तमाम मज़दूरों से अपील करना चाहिये कि वे अपना एका, मज़बूत बनाएं व शाप और फ़ैक्टरी कमेटी को अपने मुत्तहिदा मोर्चे के मुख्य हथियार की तरह बनाएं. सोशलिस्ट और इनटक यूनियनों के आम मज़दूरों को बुनियादी मांगों के लिये एक संयुक्त और फैसलाकुन लड़ाई के प्रोग्राम के साथ लेने की तमाम कोशिश होनी चाहिये. ६ मार्च के इत्तिहादी प्रदर्शनों में ज़्यादह से ज़्यादह मज़दूरों को खींचने की कोशिश होनी चाहिये.

इस सर्कुलर और आल इन्डिया यूनियन के बयान पर अपनी ब्रांच कमेटी और दूसरी कमेटियों में बहस कीजिए और ६ मार्च को प्रदर्शन करने वाले हेड आफ़िस के हुक्म को अमल में लाने के लिये ज़रूरी कोशिश कीजिए.

जनरल सेक्रेटरी

तैयार हुआ २५ . ३ . ५०